२. उसी से ठंडा, उसी से गरम

– डॉ. जाकिर हुसैन

एक लकड़हारा था । जंगल में जाकर रोज लकड़ियाँ काटता और शहर में जाकर शाम को बेच देता था । एक दिन इस ख्याल से कि आस-पास से तो सब लकड़हारे लकड़ी काट ले जाते हैं । सूखी लकड़ी आसानी से मिलती नहीं इसलिए वह दूर जंगल के अंदर चला गया । सरदी का मौसम था । कड़ाके का जाड़ा पड़ रह था । हाथ-पाँव ठिठुरे जाते थे । उसकी उँगलियाँ बिलकुल सुन्न हुई जाती थीं । वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद कुल्हाड़ी रख देता और दोनों हाथ मुँह के पास ले जाकर खूब जोर से उसमें फूँक मारता कि गरम हो जाएँ ।

जंगल में न मालूम किस-किस तरह के जीव रहते हैं । सुना है, उनमें छोटे-छोटे बालिश्त भर के आदमी भी होते हैं । उनके दाढ़ी, मुँह आदि सब कुछ होते हैं मगर होते हैं बस खूँटी ही-से । हम-तुम जैसा कोई आदमी उनकी बस्ती में चला जाए तो उसे बड़ी हैरत से देखते हैं कि यह करता क्या है । लेकिन वे हम लोगों से जरा अच्छे होते हैं क्योंकि उनके लड़के किसी परदेशी को सताते नहीं, न तालियाँ बजाते हैं और न पत्थर फेंकते हैं । खुद हमारे यहाँ भी अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते लेकिन उनके यहाँ तो सभी अच्छे होते हैं ।

खैर, लकड़हारा जंगल में लकड़ियाँ बीन रहा था तो एक मियाँ बालिश्तिये भी कहीं बैठे उसे देख रहे थे । मियाँ बालिश्तिये ने जो देखा कि यह बार-बार हाथ में कुछ फूँकता है तो सोचने लगे कि यह क्या बात है । जब कुछ समझ में न आया तो वे अपनी जगह से उठे और कुछ दूर चलकर फिर लौट आए । मालूम नहीं पूछने से यह आदमी कहीं बुरा न माने । मगर फिर न रहा गया । आखिर ठुमक-ठुमककर लकड़हारे के पास गए और कहा, ‘‘सलाम भाई, बुरा न मानो, तो एक बात पूछूँ ?’’

लकड़हारे को जरा-से अँगूठे बराबर आदमी को देखकर ताज्जुब भी हुआ, हँसी भी आई । मगर उसने हँसी रोककर कहा, ‘‘हाँ-हाँ, भई जरूर पूछो ।’’ ‘‘बस, यह पूछता हूँ कि तुम मुँह से हाथ में फूँक-सी क्यों मारते हो ?’’ लकड़हारे ने जवाब दिया, ‘‘सरदी बहुत है । हाथ ठिठुरे जाते हैं । मैं मुँह से फूँककर उन्हें जरा गरमा लेता हूँ । फिर ठिठुरने लगते हैं, फिर फूँक लेता हूँ ।’’

मियाँ बालिश्तिये ने अपना सुपारी जैसा सिर हिलाया और कहा, ‘‘अच्छा, यह बात है ।’’ यह कहकर वहाँ से खिसक गए, मगर रहे

परिचय

जन्म : १८९७, हैदराबाद (तेलंगाना)

मृत्यु : १९६९ (दिल्ली)

परिचय : डॉ. जाकिर हुसैन जी स्वतंत्र भारत के तृतीय राष्ट्रपति, विद्‌वान तथा शिक्षाविद हैं । आधुनिक भारत के विकास में आपका अनमोल योगदान रहा है । आप राष्ट्रप्रेम, आधुनिकता, वैश्वीकरण, भाषा, संस्कृति, शिक्षा और इतिहास विषयों से गहरे जुड़े रहे ।

प्रमुख कृतियाँ : ‘तालीमी खुतबत’, ‘लिटिल चिकेन इन हरी’, ‘सियासत और मासियत’, ‘बुनियादी कौमी तालीम’, ‘अब्बू खाँ की बकरी’ और ‘चौदह कहानियाँ’ आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत हास्यकथा में डॉ. जाकिर हुसैन जी ने बड़े ही मनोरंजक ढंग से लकड़हारे और बालिश्तिये की कहानी लिखी है । इस कथा के माध्यम से आपने किसी अपरिचित को न सताने, किसी की हँसी न उड़ाने, किसी पर पत्थर न फेंकने का संदेश दिया है । यहाँ आपने सभी को अच्छा बनने के लिए प्रेरित किया है ।

संभाषणीय

भाव-भंगिमाओं के आधार पर हँसने के अलग-अलग प्रकार बताओ और अभिनय सहित प्रस्तुत करो । उदा; खिलखिलाना ।

लेखनीय

प्रसार माध्यम से राष्ट्रीय प्रसंग-घटना संबंधी वर्णन पढ़ो और अपने विचार लिखो ।

पठनीय

सुने-देखे, पढ़े आशय के वाक्यों एवं मुद्‌दों का पुनःस्मरण करते हुए वाचन करो ।

श्रवणीय

प्रसिद्‌ध भौतिकशास्त्री सत्येंद्रनाथ बोस की जानकारी रेडियो/ टीवी/ यू ट्यूब पर सुनो ।

आस-पास ही और कहीं से बैठे बराबर देखते रहे कि लकड़हारा और क्या-क्या करता है ।

दोपहर का वक्त आया । लकड़हारे को खाना पकाने की फिक्र हुई । उसके पास छोटी-सी हाँड़ी थी । आग सुलगाकर उसे चूल्हे पर रखा और उसमें आलू उबालने के लिए रख दिए । गीली लकड़ी थी इसलिए आग बार-बार ठंडी हो जाती तो लकड़हारा मुँह से फूँककर तेज कर देता था । बालिश्तिये ने दूर से देखकर अपने जी में कहा-अब यह फिर फूँकता है । क्या इसके मुँह से आग निकलती है ? मगर चुपचाप बैठा देखता गया । लकड़हारे को भूख ज्यादा लगी थी इसलिए चढ़ी हुई हाँड़ी में से एक आलू, जो अभी पूरे तौर पर पका भी न था, निकाल लिया । उसे खाना चाहा तो वह ऐसा गरम था जैसे आग । उसने मुश्किल से उसे अपनी एक उँगली और अँगूठे से दबाकर तोड़ा और मुँह से 'फूँ-फूँ' करके फूँकने लगा ।

बालिश्तिये ने फिर मन में कहा-यह फिर फूँकता है । अब क्या इस आलू को फूँककर जलाएगा । लेकिन आलू जला-वला कुछ नहीं । थोड़ी देर 'फूँ-फूँ' करके लकड़हारे ने उसे अपने मुँह में रख लिया और गप-गप खाने लगा । अब तो इस बालिश्तिये की हैरानी का हाल न पूछो। वह ठुमक-ठुमककर फिर लकड़हारे के पास आया और बोला, ''सलाम भाई, बुरा न मानो तो एक बात पूछूँ ?'' लकड़हारे ने कहा, ''बुरा क्यों मानूँगा, पूछो ।''

बालिश्तिये ने कहा, ''अब इस आलू को क्यों फूँकते थे ? यह तो खुद बहुत गरम था । इसे और गरमाने से क्या फायदा ?'' ''नहीं मियाँ । यह आलू बहुत गरम है । मैं इसे मुँह से फूँककर ठंडा कर रहा हूँ ।''

यह सुनकर मियाँ बालिश्तिये का मुँह पीला पड़ गया । वे डर के मारे थर-थर काँपने लगे । बराबर पीछे हटते जाते थे । जरा-सा आदमी यों ही देखकर हँसी आए लेकिन इस थर-थर, कँप-कँप की हालत में देखकर तो हर किसी को हँसी भी आए, रंज भी हो । उसने आखिर पूछा, ''क्यों मियाँ, क्या हुआ ? क्या जाड़ा बहुत लग रहा है ?'' मगर मियाँ बालिश्तिये जब काफी दूर हो गए तो बोले, ''यह न जाने क्या बला है ? शायद कोई जादूगर है । उसी से ठंडा, उसी से गरम । हमारी समझ में यह बात नहीं आती ।'' सच तो ये है यही बात उन मियाँ बालिश्तिये की नन्हीं-सी खोपड़ी में आने की थी भी नहीं ।

शब्द वाटिका

ठिठुरना = ठंड से काँपना
सुन्न = संवेदनारहित
बालिश्त = अँगूठे के सिरे से लेकर कनिष्ठिका के सिरे तक की लंबाई, बित्ता
बालिश्तिया = छोटे कद का आदमी
ताज्जुब = आश्चर्य
सहम जाना = घबरा जाना
रंज = दुख

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

बालिश्तियों की विशेषताएँ

______ ______ ______ ______

(२) उत्तर लिखो :

पाठ में प्रयुक्त सरदी से संबंधित शब्द

....
....

(३) निम्नलिखित कथनों में से असत्य कथन को सुधारकर फिर से लिखो :

१. बालिश्तिये को खाना बनाने की फिक्र हुई ।
२. सरदी के कारण लकड़हारे के हाथ ठिठुरे जाते हैं ।
३. लकड़हारा एक भलामानस था ।
४. बालिश्तिये के पास एक छोटी हाँड़ी थी ।

I3VCGH

भाषा बिंदु

(अ) दिए गए शब्दों का वचन परिवर्तन करके अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

शब्द	वचन परिवर्तन	वाक्य
दीवार	----------	______
महिला	----------	______
लकड़हारे	----------	______
ऊँगलियाँ	----------	______
हाथ	----------	______

(आ) पाठों मे प्रयुक्त सहायक क्रिया के वाक्य ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन

वृक्ष और पंछी के बीच का संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

व्यसन से सावधान करने वाले पोस्टर बनाओ ।